विवेकानन्द

एक कथित सन्यासी



प्रकाशन :- आर्यावर्त पुस्तकालय

वर्ष :- जून,२०२२

संस्करण :- प्रथम

लेखक :- वैदिक

विवेकानंद कथित सन्यासी

प्रकाशकीय निवेदन

जो काम स्वामी विद्यानंद जी ने वर्षों पहले किया था,आज उसी से प्रेरणा लेकर हमने आर्यों के लिए एक और विजय पताका लहरा दी है.

जो जो आर्यों के विरोध में, वेदों के विरोध में, दर्शनों, उपनिषदों के विरोध में, और आर्यावर्त के विरोध में षड्यंत्र करेगा उसके लिए चिता हमने तैयार करनी ही करनी है.

हां हम यूटयूब पे नहीं है,क्योंकि हमने देखा है लोगों को अंध भक्ति करते हुए, इसी लिए कुछ लोग हमको मौन करने के प्रयास भी अवश्य ही कर सकते है. इसी लिए बिना यूटयूब के ही हम प्रमाणों सहित साहित्य से ही इनकी पोल खोल रहे है.

इस सब पुस्तकों और प्रमाणों को पढ़ने और आपके समक्ष उपलब्ध करने के लिए हमारी टीम को लगभग १ वर्ष से ज्यादा का समय भी लगा है.वैसे तो आप लोग हमारा सहयोग ही नहीं करते है, हमें पैसे नहीं आपका प्रेम चाहिए. क्योंकि हमने देखा है पैसे कोई देता नहीं है और बातें बड़ी बड़ी बनाकर निकल लेता है.

आर्यों के सामने जो आया वो मुंह के बल गिरा है,और लंगड़ा होकर ही लौटा है.

विवेकानन्द ने मैक्समुलर का भाष्य पढ़कर आर्यों के विरोध में बाते कहीं. उसको सभ्य जन कैसे पचा रहे है? आर्यों ने उसी समय विरोध किया होता तो यह "कल्ट" आज इतना प्रचलित ही नहीं होता.

एक तरफ ऋषि दयानन्द जी महाराज ने अपनी लौह लेखनी से मेक्स मुलर को जो धोया है वो आज भी दुनिया देख रही है. और स्वघोषित और प्रचारित संन्यासी विवेकानन्द ने उसी मैक्समुलर का पानी पीकर देश द्रोह कर दिया था.

सभ्य जन कैसे इस अंध प्रचार में आ गए के विवेकानन्द ने भाषण दिया? अरे भाई भाषण देकर क्या हो गया? गलत भाषण और सेकुलर बनने के चक्कर में आज यही बंगाली लोग मार खा रहे है ना? और आज भी इनको अक्ल नहीं आई है और मरते दम तक आती नहीं दिख रही. क्योंकि इनके दिमाग में ही जिंगा मछली मांस घुस चुका है. यह सात्विक लोग है क्या? नहीं कदापि नहीं. सत्य से भी यह सब लोग अरबों कोषों दूर है.

ज्यादा ना लिखते हुए अब आपके समक्ष उपलब्ध है विवेकानंद के सन्यासी होने के प्रमाण.

टीम आर्यावर्त पुस्तकालय

जय आर्यावर्त

नोट :-

लाल रंग में विवेकानंद के वचन का विषय देकर आगे उसका पूरा प्रमाण सहित लेख दिया गया है.

नीले रंग में पुस्तक का नाम और उसके पृष्ठ का संख्या दिया हुआ है.

हरे रंग में हमारी और से टिप्पणी की गई है.

विवेकानंद

कथित

सन्यासी

यहाँ विवेकानंद जी के जिस चरित्र से हमने पर्दा हटाया वह हटाना महत्वपूर्ण है किन्तु वह छिपाया जाता रहा है, इसीलिए यह सूचना दी गयी है। और यह सूचना इसीलिए महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि आने वाले समय में पेड मीडिया के प्रायोजक (मिशनरीज) चूंकि भारत के पेड मीडिया एवं आरएसएस के कार्यकर्ताओ द्वारा इस जानकारी को निरंतर युवाओं को गौ मांस खाने की प्रेरणा देने के लिए उन चरित्रों का उभारने वाले है, जिन्होंने गौ मांस भक्षण के समर्थन में दलीलें दी हैं!!

विवेकानंद का गुरु रामकृष्ण परमहंस कैसा था स्वयं विवेकानंद ने कहा -

वहां पुस्तकीय ज्ञान से हर प्रकार से अनभिज्ञ वह रहता था।

यह महाप्रतिभासम्पन्न व्यक्ति अपना नाम तक लिखना नहीं जानता था। वे अद्भुत व्यक्ति थे रामकृष्ण परमहंस।

(विवेकानंद साहित्य संचयन पृष्ठ 203)

विवेकानंद अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस के विषय में कहते हैं कि

“ इस अवतार में एक खास बात और है इस अवतार में परमात्मा का मातृत्व भाव विशेष स्पष्ट है रामकृष्ण परमहंस स्त्रियों के समान कभी कभी वस्त्र पहनते थे। इसलिए मानो वे हमारी जगन्माता जैसे ही थे। इसलिए हमें सब स्त्रियों को उस (रामकृष्ण परमहंस) जगन्माता की ही मूर्ति माननी चाहिए। वे स्त्रियों आदि के रक्षक थे। अक्षय उनकी (रामकृष्ण परमहंस) की उपासना सब घरों में प्रचलित कर दे। पुरुष हो या स्त्री सबको उनकी (रामकृष्ण परमहंस) पूजा का अधिकार है। जो प्रेम से रामकृष्ण परमहंस की पूजा करेगा उसका सदा के लिए कल्याण हो जायेगा। ”

क्या कोई पुरुष स्त्रियों के जैसे वस्त्र पहनने से सारे संसार का जगन्माता बन जायेगा ?

पाठकगण विचारें जिसका गुरु अनपढ़ है जिसे शास्त्रों का ज्ञान नहीं है, तो उसका चेला विवेकानंद भी तो उसी की भांति अनपढ़ और शास्त्र ज्ञान से रहित ही होगा ।

विवेकानंद स्वयं को ईश्वर बताते हैं -

मुझ सच्चिदानन्द के अपने महान रूप के सिवा दूसरा ईश्वर मुझे प्राय: सूझता ही नहीं ।

(विवेकानंद पत्रावली पीडीएफ पृष्ठ 190)

स्त्री के प्रति विवेकानंद के विचार -

India cannot yet produce great women, she must borrow them from other nations.

अर्थात भारत अभी भी महान महिलाओं का उत्पादन नहीं कर सकता है, उन्हें उन्हें अन्य देशों से उधार लेना होगा ।

(The complete work of Vivekananda volume 7 page 440)

विवेकानंद के अनुसार योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण जी हुए हैं या नहीं यह स्पष्ट नहीं कहा जा सकता किन्तु जो योगी नहीं है अनपढ़ है उसे विवेकानंद सबसे महान बता रहे हैं । देखिए-

भगवान श्रीकृष्ण का जन्म हुआ ही था यह हम बिल्कुल निश्चित रूप से नहीं कह सकते और बुद्ध तथा चैतन्य जैसे अवतार पुराने हैं । पर श्रीरामकृष्ण सबकी

अपेक्षा आधुनिक और सबसे पूर्ण हैं। ज्ञान, भक्ति वैराग्य, उदारता इन सब गुणों के वे मूर्त स्वरूप हैं।

(विवेकानंद पत्रावली पीडीएफ पृष्ठ 54-55)

विवेकानंद के अनुसार सारे ऋषियों और श्रीराम श्रीकृष्ण की अपेक्षा रामकृष्ण परमहंस पूर्ण हैं। अर्थात् गौमांस भक्षक रामकृष्ण परमहंस योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण और योगेश्वर भगवान् श्रीराम जी से भी अधिक ज्ञानी, वैरागी, उदार और योगी है। क्या ये भगवान् राम श्रीकृष्ण और सारे ऋषियों का अपमान नहीं हुआ?

विवेकानंद के दृष्टिकोण से गौतम बुद्ध, जीसस क्राइस्ट, मोहम्मद साहब सब वास्तविक हैं किंतु राम एवं कृष्ण हुए हैं या नहीं इसपर विवेकानंद असमंजस में हैं। और हाँ क्रोध के आवेश में आकर कुछ भी सर्टिफ़िकेट थमाने से पूर्व गुगल अवश्य करें अन्यथा ऑनलाइन पुस्तक ऑडर कर मंगवाए अध्ययन करें और अपना भ्रम दूर कीजिए तत्पश्चात ही इस विषय पर कुछ कमेंट करें। हमारा उद्देश्य सत्य भाषण कर सत्य का साथ देना है, किसी का अपमान करना नहीं।

ईसा मोहम्मद के सम्बन्ध में विवेकानंद के विचार-

आज हम ईसा की जीवनी में सम्पूर्ण अतीत का इतिहास देखते हैं वैसे तो हर सामान्य मानव का जीवन भी उसके अतीत भावसमूह का इतिहास ही है समूची जाति का यह अतीत भावसमूह प्रत्येक व्यक्ति में आनुवंशिकता, वातावरण, शिक्षा एवं पूर्व जन्म के संस्कारों द्वारा आता ही रहता है। एक प्रकार से इस पृथ्वी का सम्पूर्ण विश्व का अतीत हर जीवात्मा पर अंकित है। हमारा आज का वर्तमान

रूप उस अनन्त अतीत के एक कार्य और फल के अतिरिक्त और क्या है ? अनन्त घटना प्रवाह में अनिवार्यतया अविराम रूप से अग्रसर होनेवाली, स्थिर रहने में असमर्थ, छोटी छोटी उर्मियों के अतिरिक्त हम और क्या हैं? किन्तु मैं और तुम केवल क्षुद्र वस्तुएँ, बुलबुले मात्र हैं। विश्व व्यापार के महासागर में कुछ विशाल तरंगें रहती ही हैं। मेरे और तुम्हारे जैसे क्षुद्र जनों में जाति के अतीत जीवन का अत्यल्प अंश ही व्यक्त होता है। किन्तु ऐसे शक्तिसम्पन्न महापुरुष भी होते हैं, जो प्राय सम्पूर्ण अतीत के साकार रुप होते हैं, और जो मानो अपनी दीर्घ प्रसारित बाहुओं से सुदूर भविष्य की सीमाओं को भी स्पर्श कर रहते हैं। ये महापुरुष मानवजाति के उन्नति पथ पर यत्र तत्र स्थापित मार्गदर्शक स्तम्भों के समान हैं। वे सचमुच इतने महान् हैं कि उनकी छाया मानो समस्त पृथ्वी को आच्छन्न कर लेती है; वे अमर, अनन्त और अविनाशी हैं। इसी महापुरुष ने कहा है, 'किसी भी व्यक्ति ने ईश्वरपुत्र के माध्यम बिना ईश्वर का साक्षात्कार नहीं किया है। और यह कथन अक्षरशः सत्य है। ईश्वर पुत्र के अतिरिक्त हम ईश्वर को और कहाँ देखेंगे ? यह सच है कि मुझमें और तुममें, हममें से निर्धन से भी निर्धन और हीन से भी हीन व्यक्ति में भी परमेश्वर विद्यमान है, उसका प्रतिबिम्ब मौजूद है प्रकाश की गति सर्वत्र है, उसका स्पन्दन सर्वव्यापी है, किन्तु उसे देखने के लिए दीप जलाने की आवश्यकता होती है। जगत् का सर्वव्यापी ईश भी तब तक दृष्टिगोचर नहीं होता, जब तक ये महान् शक्तिशाली दीपक, ये ईशदूत, ये उसके सन्देशवाहक और अवतार, ये नर नारायण उसे अपने में प्रतिबिम्बित नहीं करते। हम सब को ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास है, फिर भी हम उसे देख नहीं पाते, उसे समझ नहीं पाते। ईश्वर के इन सब महान् ज्ञानज्योति से सम्पन्न अग्रदूतों में से तुम किसी एक की ही जीवन कथा लो और ईश्वर की जो उच्चतम भावना तुमने हृदय में धारण की है, उससे उसके चरित्र की तुलना करो। तुमको प्रतीत होगा कि इन जीवित और जाज्वल्यमान आदर्श महापुरुषों के चरित्र की अपेक्षा तुम्हारी भावनाओं का ईश्वर

अनेकांश में हीन है, ईश्वर के अवतार का चरित्र तुम्हारे कल्पित ईश्वर की अपेक्षा कहीं अधिक उच्च है। आदर्श के विग्रहस्वरूप इन महापुरुषों ने ईश्वर की प्रत्यक्ष उपलब्धि कर, अपने महान् जीवन का जो आदर्श, जो दृष्टान्त हमारे सम्मुख रखा है, ईश्वरत्व की उससे उच्च भावना धारण करना असम्भव है। इसलिए यदि कोई इनकी ईश्वर के समान अर्चना करने लगे, तो इसमें क्या अनौचित्य है ? इन नर नारायणों के चरणों में गिरकर यदि कोई उनकी भूमि पर अवतीर्ण ईश्वर के समान पूजा करने लगे, तो क्या पाप है ? यदि उनका जीवन हमारे ईश्वरत्व के उच्चतम आदर्श से भी उच्च है, तो उनकी पूजा करन में क्या दोष है ? दोष की बात तो दूर रही ईश्वरोपासना की केवल यही एक विधि सम्भव है। तुम कितना ही प्रयत्न करो, पुनः पुनः सूक्ष्म से सूक्ष्म विषयों पर मनन करो, पर जब तक तुम इस मानव जगत् में, मानव देह में अवस्थित हो, नर भावापन्न हो, तब तक तुम्हारा विश्व मानवीय होगा, तुम्हारा धर्म मानवीय होगा और तुम्हारा ईश्वर भी मानवीय होगा। उसका अन्यथा होना असम्भव है। कौन इतना निर्बुद्धि है, जो प्रत्यक्ष साक्षात् वस्तु का ग्रहण कर, कल्पनाओं के पीछे दौड़ता फिरेगा उन भावनाओं के साक्षात्कार के लिए खाक छानता फिरेगा, जिनकी धारणा करना भी कठिन है और जिन तक किसी स्थूल माध्यम की सहायता विना पहुँचना सर्वथा असंभव है। इसलिए ईश्वर के इन अवतारों की सभी युगों तथा सभी देशों में पूजा होती रही है।

(विवेकानंद साहित्य संचयन पृष्ठ 204)

The ancient message of Krishna is one harmonizing three Buddha's, Christ's and Mohammed's. three started an idea and carried it to its extreme. Krishna antedates all the other prophets. [Yet, we might Krishna takes old ideas and synthesizes them,

[although] his is the most ancient message. His message was for the time being submerged by the advance wave of Buddhism. Today is the message peculiar to India. If you will have it so, this afternoon will take Mohammed and bring out the particular work of the great Arabian prophet... Mohammed [as] a young man... did not [seem to] care much for religion. He was inclined to make money. He was considered a nice young man and very handsome. There was a rich widow. She fell in love with this young man, and they married. When Mohammed had become emperor over the larger part of the world, the Roman and Persian empires were all under his feet, and he had a number of wives. When one day he was asked which wife he liked best, he pointed to his first wife: "Because she believed [in] me first." Women have faith.. Gain independence, gain everything, but do not lose that characteristic of women! Mohammed's heart was sick at the sin, idolatry and mock worship, superstitions and human sacrifices, and so on. The Jews were degraded by the Christians. On the other hand, the Christians were worse degraded than his own countrymen.

कृष्ण का प्राचीन संदेश बुद्ध, ईसा मसीह और मोहम्मद इन तीन के बीच सामंजस्य स्थापित करने वाला है। तीन ने एक विचार शुरू किया और इसे अपने चरम पर ले गए। कृष्ण अन्य सभी नबियों का विरोध करते हैं। फिर भी, हम कृष्ण के पुराने विचारों को ले सकते हैं और उन्हें संश्लेषित कर सकते हैं, [हालांकि] उनका सबसे प्राचीन संदेश है। उनका संदेश कुछ समय के लिए बौद्ध धर्म की अग्रिम लहर में डूबा हुआ था। आज का संदेश भारत के लिए अनोखा है। यदि

आपके पास ऐसा होगा, तो आज दोपहर मोहम्मद को ले जाएगा और महान अरब पैगंबर के विशेष कार्य को सामने लाएगा... मोहम्मद [के रूप में] एक युवा व्यक्ति... धर्म के लिए [लगता है] ज्यादा परवाह नहीं करता था। वह पैसा बनाने के लिए इच्छुक था। वह एक अच्छा युवक और बहुत सुंदर माना जाता था। एक अमीर विधवा थी। उसे इस युवक से प्यार हो गया और उन्होंने शादी कर ली। जब मोहम्मद दुनिया के बड़े हिस्से पर सम्राट बन गया था, रोमन और फारसी साम्राज्य उसके पैरों के नीचे थे, और उसकी कई पत्नियां थीं। जब एक दिन उनसे पूछा गया कि उन्हें कौन सी पत्नी सबसे अच्छी लगती है, तो उन्होंने अपनी पहली पत्नी की ओर इशारा किया: "क्योंकि वह पहले मुझ पर विश्वास करती थी।" नारी में आस्था है.. स्वतंत्रता पाओ, सब कुछ पाओ, पर नारी के उस गुण को मत खोना! ... मोहम्मद का दिल पाप, मूर्तिपूजा और नकली पूजा, अंधविश्वास और मानव बलि, और इसी तरह से बीमार था। यहूदियों को ईसाइयों ने नीचा दिखाया। दूसरी ओर, ईसाई अपने ही देशवासियों से भी बदतर अपमानित थे।

(Delivered on march 25, 1900 in San Francisco Bay Area)

ईसा तो ईश्वरावतार थे लोग उनकी हत्या कर ही नहीं सकते थे। उन्होंने जिसे शूली पर चढ़ाया था। वह तो उनकी छाया मात्र थी। मृगतृष्णा के समान भ्रांतिमात्र।

(विवेकानंद से वार्तालाप पृष्ठ 106)

विवेकानंद की दृष्टि में विभिन्न संप्रदाय-

मैं किसी भी सम्प्रदाय का विरोधी नहीं हूं। बल्कि नाना सम्प्रदाय के रहने से मैं सन्तुष्ट हूं। और मेरी इच्छा है कि उनकी संख्या दिनोंदिन बढ़ती जाये।

{धर्म रहस्य}

विवेकानंद की दृष्टि में हिन्दुओं का मुस्लिमों के प्रति वर्ताव-

इसी भारत में हिन्दूओं ने ईसाईयों के लिए गिर्जे और मुसलमानों के लिए मस्जिद बनवाई है। और अब भी बनवा रहे हैं। ऐसा ही करना पड़ेगा वे हमें चाहे जितनी घृणा की दृष्टि से देंखे चाहे जितनी पशुता दिखायें अथवा अत्याचार करें। और हमारे प्रति चाहे जैसी कुत्सित भाषा का प्रयोग करें। पर हम ईसाईयों के लिए गिर्जे और मुसलमानों के लिए मस्जिदें बनवाना हम नहीं छोड़ेंगे हम तबतक यह काम बंद न करें जबतक हम अपने प्रेम बल से उनपर विजय प्राप्त न कर लें।

(भारत में विवेकानंद पृष्ठ 114-115)

अब तैंतीस वर्ष की उम्र में वैश्याओं के साथ एक ही कमरे में ठहर सकता हूं।

(पत्रावली पृष्ठ 287)

प्राचीन देवताओं में चंचल लडाकू शराबी गौमांसाहारी देवताओं में जिनको जले हुए मांस की गंध और तीव्र सुरा की आहुती ही से परम आनंद मिलता था कुछ असंगति देखने लगे कभी कभी इन्द्र इतना मद्य पान कर लेता था कि वह बेहोश होकर गिर पड़ता था। और अण्ड बण्ड बकने लगता था।

(The complete work of Vivekananda volume-2 Page 109-110)

मुसलमानों के लिए हिन्दुओं को जीतना कैसै सम्भव हुआ हिन्दुओं का भौतिक सभ्यता का निरादर करना ही इसका कारण था। सिले हुए कपड़े तक पहनना इन्हे मुसलमानों ने सिखाया। क्या अच्छा होता अगर हिन्दू मुस्लमानों से ढंग से खाने की तरकीब सीख लेते।

(विवेकानंद पत्रावली)

ईश्वर की व्याख्या तुम कैसे करोगे उसके ना दिमाग है ना युक्ति। वह हम सभी को छोटे छोटे दिमाग और छोटी सी विचार शक्ति देकर धोखा दे रहा है पर अबकी बार वह मुझे धोखा ना दे सकेगा।

(विवेकानंद पत्रावली पृष्ठ 287)

जिन लोगों के गुरु ही विवेकानंद जैसे मांसाहारी, पशुबलि देने वाले और इस्लाम के समर्थक हो, उनके चेले कैसे होंगे, आप अनुमान लगा सकते हैं? नीचे देखिए स्वामी विवेकानंद का कच्चा चिट्ठा -

पहली अंग्रेजी पुस्तक जिससे हम प्रमाण दे रहे हैं, वह है- The Monk as Man The Unknown Life of Swami Vivekananda by Shankar Penguin Books, इस पुस्तक के अनुसार स्वामी विवेकानन्द, जिन का पूर्व नाम नरेंद्रनाथ था, वह बचपन से लेकर मृत्युपर्यन्त मांसाहार का सेवन करते रहे, और न केवल उन्होंने स्वयं मांसाहार किया, बल्कि दूसरों को भी मांस खाने के लिए प्रेरित किया। यही नहीं अनेकों बार उन्होंने स्वयं दूसरों को मांस पकाकर भी खिलाया। यहां तक उनके गुरु रामकृष्ण द्वारा मांसाहार करने के भी प्रमाण हैं।

भाई महेंद्रनाथ को मांसाहार करने की प्रेरणा-

Narendranath was fourteen years old then...In his memoirs, Mahendranath gives a marvellous account of the family's journey to Raipur. He also describes an incident on the way when his brother Naren tried to force Mahendranath, who was a vegetarian under the influence of his Vaishnava grandmother, to eat meat.

Ch 1, page 15

नरेंद्र ने भाई सहित किया बकरों के सिर के मांस का सेवन-

Take for instance, the description of the meals the brothers had. In those days, butchers' shops did not sell the head of a goat. So Narendranath and Mahendranath made a bargain with one particular butcher that he supply them with ten to twelve goats' heads for a price of two to four annas. They then prepared meat curry with the goats' heads and added two-and-a-half seer (around two kilos) of green peas. 'In the afternoon, Mahendranath writes, 'after coming back from school, Swamiji and I used to eat the curry, along with sixteen rotis.

Ch 1, page 16

नरेंद्र ने भाई को कराया बलात् मांसाहार-

Mahendranath elaborates, 'They cooked meat at Ghoratala. I would not eat it. Then my elder brother came and put a piece of meat in my mouth and pounded on my back so that I would be forced to swallow it. "Eat!" he commanded. Then what did I do? I ate it. What else can a tiger do when it tastes blood?'

Ch. 1, page 22

नरेंद्र ने हिरण का मांस खाया-

Master-Mashai asked, 'Did your mother say anything?" Naren replied, 'No, she was simply urging me to eat. They had cooked deer's meat. Although I did not feel like eating, I took some.

Ch. 1, page 33, 34

नरेंद्र ने गुरु रामकृष्ण के साथ किया हुक्के का सेवन-

Sri Ramakrishna also shared his smoking hookah with Narendranath.

होटल में हिंदुओं के अखाद्य / निषिद्ध भोजन अर्थात् गोमांस का सेवन किया-

Once, he ate in a hotel and immediately came and confessed to Sri Ramakrishna: 'Thakur, today in a hotel, I have eaten what we Hindus consider inedible.' 'You have not committed a sin, Thakur assured him.

Ch. 2, page 103

(विडम्बना यह है कि गुरु रामकृष्ण गोमांस के सेवन को पाप नहीं मान रहे हैं।)

माता शारदा देवी ने बनाया गुरु रामकृष्ण के लिए मांसाहार-

Mother Sarada Debi, Sri Ramakrishna's consort, gives us an insight into the way Narendranath cooked. She writes, 'When I cooked for Thakur in Cossipore, I boiled the meat in water, adding a few bay leaves and a small quantity of spices. I cooked it until it was as tender as cotton.

Ch. 2, page 104

अनेकविध रूप से मास पकाने वाले नरेंद्र-

Naren could cook meat in a variety of ways: he used to mince it and then fry it; he used to cook it with mashed potatoes-what is it called?' Possibly she was referring to meat cutlets.

Ch. 2, page 104

स्वामी विवेकानंद ने दूसरों के लिए बनाया सीख कबाब-

At Meerut, Swamiji demonstrated to his disciples the art of becoming a jack of all trades. One moment, he would read the holy scriptures to them; the next moment, he would cook them delicacies. One day, he hit upon the idea of preparing shikh kebab for everyone. He arranged for the meat and used branches of a peach tree as skewers. Then after cooking he personally served the guests.

Ch. 2, page 108

(वाह रे, विचित्र संन्यासी शास्त्र भी पढ़ता रहा और मांस भी पकाता रहा । शास्त्र पढ़कर भी यह न जाना कि मांस पकाना और खाना पाप है ।)

भाई महेंद्रनाथ को दी अण्डे और आमलेट खाने की सलाह-

One day, in London Swami Vivekananda asked his brother Mahendranath, 'What have you eaten today?' He then expressed concern about his welfare and added, "If you eat the same thing

every day, you will feel bored. Ask the cook to make a poached egg or an omelette once in a while. That will change your taste.'

Ch. 2, page 113

स्वामी जी ने किया मछली का सेवन-

Another evening fish with cauliflower had been cooked for dinner. Mr J.J. Goodwin, an admirer of Swamiji's, was with him. He refused to eat and asked Swami Vivekananda, 'Why did you eat that fish? Vivekananda laughed as he explained that the old housemaid had purchased the fish and had he not eaten it, she would have thrown it away.

Ch. 2, page 114

स्वामी जी ने खाया घोंघे का मास-

Patla-da's next priceless piece of information was regarding how Swami Vivekananda ate clams (at an i). It requires quite a bit of skill to extract the hot clam from its shell (ft), but Swami Vivekananda did not require tutoring. After all, he hailed from the land of snails (um) and oysters!

Ch. 2, page 119

(वाह रे, विचित्र स्वामी कीड़ों का मांस भी न छोड़ा।)

स्वामी जी के नाश्ते में अण्डे-

When Swami Vivekananda went to the United States for the second time, he stayed in Pasadena, southern California. His hostess, Mrs Alice Hansbrough, served him the following breakfast, which he enjoyed immensely: fruit, poached eggs...

Ch 2, page 119, 120

स्वामी जी द्वारा सिगार और मटन (भेड़ बकरे का मांस) का सेवन-

During this period, either Swami Vivekananda abstained from smoking cheroots (cigar) altogether or smoked only a few. At lunch with the Hansbrough family, he would eat mutton and an assortment of vegetables.

Ch 2, page 120

स्वामी जी द्वारा पश्चिम में वेदान्त और बिरयानी दोनों का प्रचार-

I have not yet taken the opportunity to discuss at length Swami Vivekananda's expertise in the kitchen. I have merely drawn your attention to the fact that he was the only Indian who had the courage and the foresight to simultaneously promote Vedanta and biryani
(High) in the West.

Ch 2, page 126

(वाह रे, विचित्र संन्यासी क्या वेदांत में मांसाहार की शिक्षा है अथवा यह ईश्वरप्राप्ति से संबंधित वेद का अंतिम / चरम भाग है?)

स्वामी जी ने पकाया मांसयुक्त पुलाव-

There are many more stories surrounding pulao. The first time that Swami Vivekananda was leaving for the United States, he decided to cook pulao for everyone who had gathered to see him off in Bombay. Meat, rice, kheer and other ingredients were assembled. Swami Vivekananda picked up some pieces of meat from the stew and ate them with relish. He then set the ingredients on the fire.

Ch 2, page 128

स्वामी जी ने खाए समुद्री झींगे-

On another occasion, Swami Vivekananda was taken to a French restaurant. There he ordered fried prawns (m). When he returned home that evening, he began vomiting.

Ch 2, page 132

स्वामी जी दूध और मांस साथ साथ लेते थे -

Pada-da told me, 'Swami Vivekananda's eating habits were radical! Our ancient scriptures say that milk and meat should not be taken together. But Swami Vivekananda was quite reckless in this regard. He was accustomed to having them together.

Ch 2, page 134

स्वामी जी को धूम्रपान की लत - When Swami Vivekananda was staying with the Leggett family, he would frequently excuse himself from the table during the course of the meal and go outside and smoke.

Ch 2, page 135

शिष्य शरच्चंद्र ने बनाये गुरु विवेकानंद के लिए मछली से नाना प्रकार के व्यंजन-

One day, Swami Vivekananda asked his disciple Sharat Chandra, who hailed from East Bengal, to cook for him. Vivekananda told him, You must cook for your guru.' Sharat Chandra hastened to Balaram Basu's house with fish, vegetables and other ingredients.Let us hear the rest of the story from the disciple: "I finished cooking rice, munger dal, koi machher jhol (कोई मछली का शोरबा), machher tak (खट्टी मछली) and machher shuktani (H). He took his bath and prepared to eat. I told him that I had not yet finished, but like a child he implored me to serve. "Please bring whatever you have cooked, I cannot wait any more. I am famished!"

Ch 2, page 137, 138

स्वामी जी ने पकाई रुई मछली-

Some years after this event, and just a few months before he passed away, it was Swami Vivekananda who cooked for his disdple. Sharat Chandra had brought a rui fish to offer to the deity. He describes what happened next: 'After the fish was cut

into pieces, a portion was kept aside for the deity and Swamiji took a portion, for he wanted to cook it in the English way. Everybody was concerned that he might feel thirsty if he cooked by the fire and so they asked him not to cook. But he did not listen. Swamiji used milk, vermicelli, yoghurt and other spices to cook the fish.

Ch 2, page 138, 138

स्वामी जी ने सिस्टर निवेदिता के लिए पकाया मटन-

The date was March 1899. A few days earlier, he had cooked a surprise supper for Sister Nivedita. The menu consisted of cold mutton, bread and butter, and coffee.

Ch 2, page 142

मरने से पूर्व स्वामी जी ने खाई हिलसा मछली की करी -

Patla-da, what did he take for lunch on that last day, Friday, 4 July 1902?' 'Hilsa, of course! Nobody knew on the morning of 4 July that the last hours of his life had arrived! Swami Premananda reminisced about that morning. The year's first hilsa from the Ganga was bought today. Swamiji said, "Bangals worship the first hilsa of the season, so why don't you worship this hilsa?" He ate the hilsa curry with ambal (a kind of sour broth) and was satisfied.

Ch 2, page 143

मांसाहार और धूम्रपान के कारण स्वामी जी को हुए नाना प्रकार के 31 रोग-

Here is a list of the various diseases, medical conditions and other ailments that Swami Vivekananda suffered from during the course of his life: 1. Severe headaches (migraines) 2. Tonsillitis 3. Diphtheria and influenza/cough 4. Asthma 5. Typhoid 6. Malaria 7. Other kinds of persistent fevers 8. Liver disease 9. Indigestion and other stomach ailments/gastroenteritis 10. Accumulation of water in the stomach 11. Dysentery and diarrhea 12. Dyspepsia and abdominal pain 13. Gallstones 14. Lumbago (lower back pain) 15. Neck ache 16. Bright's disease (acute nephritis) 17. Kidney ailments 18. Dropsy 19. Albuminuria 20. Bloodshot eyes 21. Loss of vision in the right eye 22. Insomnia 23. Premature greying of hair and beard 24. Neurasthenia 25. Body heating up after dinner 26. Inability to tolerate heat 27. Excessive fatigue 28. Seasickness 29. Sunstroke 30. Diabetes 31. Heart problems.

Ch 4, page 175, 176

मांसाहार के कारण स्वामी जी का शरीर हुआ दुर्बल और बाल हुए सफेद-

By 28 April 1897, we find Swami Vivekananda writing to Mary Hale

...And now I am losing flesh rapidly, because I am made to live upon meat and meat alone-no bread, no rice, no potatoes, not even a lump of sugar in my coffee!... I am going to train a big beard, now it is turning grey

Chapter 4, page 188

मांसाहार से बढ़ा यूरिक एसिड-

A respected doctor whom Swami Vivekananda consulted in London asked him to follow a vegetarian diet and avoid lentils. According to him, an excess of uric acid was the cause of all his physical problems. Meat and lentils led to an increase in the amount of the acid and were, therefore, best avoided.

Ch. 4, Page 197

मांसाहार के कारण स्वामी जी ने पकड़ा बिस्तर-

The doctors have put me to bed; and I am forbidden to eat meat, to walk or even to stand up, to read and write.

Ch. 5, Page 21

Also in April, Swamiji told Miss Macleod, 'I shall never see forty? He was thirty-nine at: the time.

Ch. 5, page 225

मरते समय भी स्वामी जी ने मांसाहार और धूम्रपान न छोड़ा-

Ch. 5, Page 226

Last day of Swami Vivekananda life- Friday, 4 July 1902

Lunch- 11.30am. Swami Vivekananda eats with great relish the hilsa fish curry with rice, fries and ambal (a preparation with fish). He eats with everybody present.
5:00p.m.
He smokes, then goes to the bathroom and returns.
9.00 p.m. Swami Vivekananda is lying on his back. Then he turns on his right side. His right hand trembles for a while. Perspiration appears on his forehead. Then he begins crying like a small child.
9.02-9.10pm. Swami Vivekananda breathes deeply. His head starts shaking and then it falls on the side of the pillow; his eyes dilate.
(यह पुस्तक- "The Monk as Man" पीडीएफ के रूप में इंटरनेट पर उपलब्ध हैं।)

(इस प्रकार अंततः जीवन पर्यन्त मांसाहार और धूम्रपान के व्यसन के कारण स्वामी जी अल्पायु में मृत्यु को प्राप्त हुए।) और न केवल विवेकानंद ने स्वयं मांसाहार का सेवन किया, अपितु दूसरों को भी मांसाहार जैसा पाप करने के लिए प्रेरणा दी। इसके लिए हम प्रमाण दे रहे हैं, दूसरी पुस्तक विवेकानंदजी के संग में श्री शरच्चन्द्र चक्रवर्ती, रामकृष्ण मठ, नागपुर से- परिच्छेद २७

स्थान बेलूर मठ (निर्माण के समय) वर्ष १८९८

एक शिष्य ने स्वामीजी से पूछा - "मछली तथा मांस खाना क्या उचित तथा आवश्यक है?"

स्वामी जी ने उत्तर दिया "खूब खाओ भाई, इससे जो पाप होगा यह मेरा तुम अपने देश के लोगों की ओर एकबार ध्यान से देखो तो मुँह पर मलिनता की छाया छाती में न साहस, न उल्लास पेट बड़ा, हाथ-पैरों में शक्ति नहीं है डरपोक और कायर- पीडीएफ पृष्ठ २६०-२६८, पुस्तक पृष्ठ १९१-१९२

(विडम्बना यह है कि स्वामी जी मांसाहार को पाप भी मान रहे हैं और अपने शिष्य को ऐसा करने के लिए भी कहते हैं। उनके अनुसार मांसाहार से शक्ति बढ़ती है, परंतु ऊपर दिए गए प्रमाणों से तो यही सिद्ध होता है कि मांसाहार के कारण वह स्वयं ही दुर्बल, रोगी और अशक्त हो गए।)

शिष्य :- देश (पूर्व बंग) में हम दोनों समय मछली भात खाते हैं।

स्वामी जी :- खूब खाया कर घासपात खाकर, पेट रोग से पीड़ित बाबा जी के दल से देश भर गया है। अतः अब देश के लोगो को मछली, मांस खिलाकर उद्यमशील बना डालना होगा.. नहीं तो धीरे-धीरे देश के सभी लोग जड़ बन जाएंगे। इसीलिए कह रहा था, मछली और मास खूब खाना।" पीडीएफ पृष्ठ २७०-२७२, पुस्तक पृष्ठ १९३

(शाकाहार से यदि रोग होता तो ऊपर दिए गए प्रमाणों में डॉक्टर उनको मांसाहार छोड़कर शाकाहार की सलाह न देते। मांसाहार से व्यक्ति यदि उद्यमशील होता, तो वह स्वयं उससे रोगी और अशक्त क्यों हो गए? श्रीकृष्ण, श्रीराम आदि अनेक महापुरुष हुए जो शाकाहारी थे, तो क्या वे सब उद्यमशील नहीं थे?)

स्वामी जी शिष्य को कहते हैं-"... तेरी जिस समय वास्तव में सत्वगुण में स्थिति होगी, उस समय तू मांसाहार छोड़ देना।"

शिष्य :- परन्तु महाराज, छान्दोग्य उपनिषद में तो कहा है "आहारशुद्धी सत्वशुद्धिः शुद्ध" वस्तु खाने से सत्त्वगुण की वृद्धि होती है, इत्यादि। तमोगुण को उदीप्त करने वाले पदार्थों को छोड़ देना ही क्या यहाँ पर श्रुति का अभिप्राय नहीं है। अतः सत्वगुणी बनने के लिए पहले से ही रज व तमोगुण को उदीप्त करने वाले पदार्थों को छोड़ देना ही क्या यहाँ पर श्रुति का अभिप्राय नहीं है!" पीडीएफ पृष्ठ २७१, पुस्तक पृष्ठ १९४

(आगे इस प्रश्न का उत्तर स्वामी विवेकानंद ने नहीं दिया और शिष्य को केवल दूसरे विषय में उलझा दिया। और यदि स्वामी जी की बात माने, तो उसके अनुसार स्वामी जी में कभी सत्वगुण का उदय ही नहीं हुआ क्योंकि उन्होंने जीवन भर मांसाहार नहीं छोड़ा। वास्तव में मांसाहार छोड़ते, तभी तो सत्व शुद्ध होकर सत्वगुण बढ़ता, परंतु ऐसा वह जीवनभर न कर पाए।)

स्वामी जी शिष्य को कहते हैं- "वैदिक तथा मनु के धर्म में मछली और मास खाने का विधान है।"- पीडीएफ पृष्ठ २६९, पुस्तक पृष्ठ १९२

भक्ती योग पर भाषण देते हुए स्वामी जी कहते हैं जो मांस खाता है वह खुद ही पशुओं को मारे मांस खाना उनके लिए आवश्यक है जो कठिन परिश्रम करते हैं और जिन्हें भक्त नहीं बनना है।

That it would be better if every man who eats meat killed the animal himself Eating meat is only allowable for the people who do very hard work and who are not going to be bhakts:

The complete work of Swami Vivekanand, Vol 4- Pg. 4-5

प्राम्भ में मेरे गुरु शाकाहारी थे लेकिन यदी मांस काली माँ को चड़ाया जाए तो वह उसे मस्तक से लगा लिया करते थे। किसी की हत्या करना निःसंदेह ही पाप कर्म है लेकिन लेकिन रसायनशास्त्र की खोज ने यह साबित किया है की शाकाहार मानव शरीर के लिए उपयुक्त नहीं है इसलिए मांस खाने के अलावा कोई नहीं है। यदी मनुष्य को सक्रिय रहना है तो मांस खाना ही एक साधन है। यह सत्य है की सम्राट अशोक ने अनको जानवरों का जीवन तलवार की धार से बचाया था लेकिन हजारों सालों की गुलामी उससे कही अधिक बुरी है। कुछ बकरियों की जान लेना या फिर अपनी पत्नी बेटियों की रक्षा करने में असमर्थ रहना अपने पुत्र के हाथों से खाने को लुटते हुए बचाना में असमर्थ रहना इसमें से कोनसा अधिक पाप कर्म है। जो कठिन परिश्रम नहीं करते हैं लिए शाकाहार पर जीना ठीक है लेकिन जो परिश्रम करके अपनी जीविका चलाते हैं उनके लिए मासाहार आवश्यक है। सभी के ऊपर शाकाहार को थोपना ठीक नहीं है और ये ही देश के गुलाम होने का कारण है। जापान इसका उदाहरण है की भोजन क्या कर सकता है

About vegetarian diet I have to say this-first, my Master was a vegetarian; but if he was given meat offered to the Goddess, he

used to hold it up to his head. The taking of life is undoubtedly sinful; but so long as vegetable food is not made suitable to the human system through progress in chemistry, there is no other alternative but meat eating. So long as man shall have to live a Rajasika (active) life under circumstances like the present, there is no other way except through meat-eating. It is true that the Emperor Asoka saved the lives of millions of animals by the threat of the sword; but is not the slavery of a thousand years more dreadful than that? Taking the life of a few goats as against the inability to protect the honour of one's own wife and daughter, and to save the morsels for one's children from robbing hands - which of these is more sinful? Rather let those belonging to the upper ten, who do not earn their livelihood by manual labour, not take meat; but the forcing of vegetarianism upon those who have to earn their bread by labouring day and night is one of the causes of the loss of our national freedom. Japan is an example of what good and nourishing food can do.

The complete work of Swami Vivekanand, Vol - 4- Pg 487

The cow does not eat meat, nor does the sheep. Are they great Yogis, great non-injurers (Ahimsakas)? Any fool may abstain from eating this or that; surely that gives him no more distinction than to herbivorous animals. - The complete work of Swami Vivekanand, Vol-3-Pg68

गाय मांस नहीं खाती और न भेद ही तो या वे बहुत बड़े योगी हो गए अहिंसक हो गए। ऐसा गैर कोई भी कोई विशेष चीज खान छोड़ दे सकता है पर उससे वह घासाहारी पशुओं की अपेक्षा कोई विशेषता नहीं प्राप्त करता। विवेकानंद साहित्य भाग -4, पृष्ठ 41

(परंतु यदि हम वेदों को पढ़ें, तो उसमें कहीं भी मछली और अन्य पशु का मांस खाने का विधान नहीं है, अपितु मात्र शाकाहार करने का ही विधान है)

'व्रीहिमत्तं यवमत्तमथो माषमथो तिलम्।
एष वो भागो निहितो रत्नधेयाय दन्तौ मा हिसिष्टं पितरं मातरं च॥

* अथर्व० ६/१४०/२

हे दन्तपंक्तियों! (वा दान्तयुक्त विद्वान् मनुष्यों!) तुम चावल खाओ, जौ खाओ, उड़द खाओ तथा तिलों का सेवन करो। यह तुम्हारे लिए रमणीय फल को धारण करने के लिए अन्न का भाग स्थापित किया है। तुम पितृशक्ति और मातृशक्ति से सम्पन्न उपकारी पशुओं की हिंसा मत करो अर्थात् तुम मांसाहार से सर्वथा दूर रहो।

वेद में शतशः मन्त्र हैं, जिनमें गौ आदि उपकारी पशुओं के न मारने का विधान किया गया है। कुछ मन्त्र-खण्ड यहाँ प्रस्तुत किये जाते हैं

गां मा हिंसीः। * यजुः १३ / ४३

गाय को मत मार

***मा हिंसीरेकशफ पशुम् । यजुः १३/४८**

एक खुरवाले घोड़ा, गधा आदि प्राणियों को मत मार

***अदितिम् मा हिंसीः । यजुः १३ / ४९**

न मारने योग्य गौ को मत मार

चतुष्पात् पाहि । यजुः० १४/८

चार पैरवाले उपयोगी और अहिंसक प्राणियों की रक्षा कर । इस सूक्ति से भेड़, बकरी, गाय, भैंस आदि सभी उपकारी चार पैर वाले प्राणियों का ग्रहण जाता है ।

***यजमानस्य पशून् पाहि यजुः०१ / १**

हे ईश्वर! आप यजमान के उपकारी और अहिंसक पशुओं की रक्षा करो ।

(विडम्बना यह है कि विवेकानंद ने मनुस्मृति में मांसाहार विधान के प्रक्षिप्त श्लोकों को तो ग्रहण कर लिया, परंतु जिन मूल श्लोकों में निर्दोष पशुओं की हत्या और मांसाहार का निषेध है, वह उन्हें दिखाई ही न दिए)

(१) *योऽहिंसकानि भूतानि हिनस्त्यात्मसुखेच्छया । स जीवंश्च मृतश्चैव न क्वचित्सुखमेधते ॥* - (मनु ०५/४५)

अर्थ:- जो जीव वध-योग्य नहीं हैं, उनको जो कोई अपने सुख के निमित्त मारता है, वह जीवित दशा में भी मृतक तुल्य है, वह कहीं भी सुख नहीं पाता है।

(२) *नाऽकृत्वा प्राणिनां हिंसां मांसमुत्पद्यते क्वचित् । न च प्राणिवधः स्वर्ग्यस्तस्मान्मांस विवर्जयेत् ॥ * - (मनु ०५/४८)

अर्थ:- जीवों की हिंसा किए बिना, मांस की प्राप्ति नहीं होती और जीवों की हिंसा, सुख प्राप्ति में बाधक है, अतः मांस भक्षण कदापि नहीं करना चाहिए।

(३) "समुत्पत्तिं तु मांसस्य वधबन्धौ च देहिनाम्। प्रसमीक्ष्य निवर्तेत सर्वमांसस्य भक्षणात् ॥ * - (मनु० ५ / ४९)

अर्थ:- मांस की उत्पत्ति जैसे होती है उसको, जीवों का बन्धन तथा उनकी हिंसा इन बातों को देखकर, सब प्रकार से मांस भक्षण का त्याग करना चाहिए।

(४) *अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी। संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घातकाः ॥* (मनु० ५/५१)

अर्थ:- पशु-हत्या की अनुमति देने वाला, शस्त्र से मांस काटने वाला, पशु को मारने वाला, पशुओं को मारने के लिए खरीदने वाला और बेचने वाला, मांस पकाने वाला, परोसने वाला और खाने वाला, ये सब घातक (हिंसक) अर्थात् पापी हैं।

(५) *वर्जयेन्मधुमांसं च॥* (मनु ०२ / १७७)

अर्थ:- मद्य और मांस का सेवन छोड़ देना चाहिए।

अत: हम देख सकते हैं कि "विवेकानंद के संग में" पुस्तक में स्वामी विवेकानंद ने शिष्य को जो कुछ बताया, वह वेद और मनुस्मृति के विरुद्ध था। यह पुस्तक अंग्रेजी में "Talks with Swami Vivekananda" के रूप में भी उपलब्ध है, और Sec. XXVII, Page 198-202 के अंतर्गत ऊपर दिया गया विवरण अंग्रेजी में भी देखा जा सकता है। यह दोनों पुस्तक पीडीएफ के रूप में इंटरनेट पर उपलब्ध हैं।

****

स्वामी विवेकानंद न केवल मांसाहारी थे, परंतु पशुबलि का समर्थन करते भी थे और यहां तक स्वयं पशुओं की बलि भी देते थे। आइए स्वामी विवेकानंद के इन पापकर्मों का प्रमाण अन्य पुस्तकों से देते हैं

१. स्वामी विवेकानंद द्वारा देवी काली पर पशुबलि चढ़ाने का समर्थन

One day in the great Kali temple of Calcutta, one western lady shuddered at the sight of the blood of the goats sacrificed before the Deity, and exclaimed - "Why is there blood before the Goddess? Quickly the swami retorted - 'Why not a little blood to complete the picture?" - (Vivekanand - A Biography by Swami Nikhilananda, Advaita Ashram - In Northern India, Pdf Pg. 136, Book Pg. 291)

२. स्वामी विवेकानंद द्वारा पशु बलि

Sister Christine को बेलुर मठ, हावड़ा से 12th November 1901 को लिखे अपने पत्र में स्वामी जी लिखते हैं कि हमने काली मां की पूजा की बकरे की बलि दी और आतिशबाजी की। Day before yesterday, however, came the Puja of Kali. We had an image, too, and sacrificed a goat and burned a lot of fireworks. (The complete works of Swami Vivekanand, Vol. 9, Pdf Pg. 307, Book Pg. 169)

३. वैदिक शास्त्रों में निषिद्ध गोमांस का सेवन करना

सभी जानते हैं कि हिंदुओं का मुख्यतः प्रतिबंधित भोजन गौमांस है । शिकागों में जब हिंदुओं ने उनके विधर्मियों के साथ एक ही मेज पर बैठकर निषिद्ध भोजन गोमांस खाने का विरोध किया, तो उन्होंने कहा कि यदि भारतवासी चाहते हैं कि मैं नियमानुसार हिंदू भोजन का सेवन करूँ, तो वह मेरे लिए एक रसोइये भेज दें और उसको रखने के लिए पर्याप्त रुपयों का प्रबंध कर दें ।

To the accusation from some orthodox Hindus that the Swami was eating beef and other forbidden food at the table of infidels, he retorted:...Am I a nation's slave?... To another Indian devotee he wrote in similar vein: ... If the people of India want me to keep strictly to Hindu diet, please tell them to send me a cook and money enough to keep him. (Vivekanand - A Biography by Swami Nikhilananda - The parliament of religions, Pdf Pg. 67, Book Pg. 144)

४. स्वामीजी ने बताया कि वैदिक काल में ब्राह्मण गोमांस खाते थे

The Swami courageously told them about the eating of beef by the brahmins in Vedic times. One day, asked about what he considered the most glorious period of Indian history, the Swami mentioned the Vedic period, when "five brahmins used to polish off one cow". (Vivekanand - A biography by Swami Nikhilananda - As a wandering monk, Pdf Pg. 50, Book Pg. 108)

(मूर्ख संन्यासी जब वेदों में ही मांस खाना निषिद्ध है, तो फिर प्राचीन वैदिक समय में ब्राह्मणों द्वारा गोमांस क्योंकर खाया गया होगा?)

५. हिंदुओं को दूसरे देशों की बराबरी करने के लिए मांसाहार करने की वकालत

He advocated animal food for the Hindus, if they were to cope at all with the rest of the world and find a place among the other great nations. - (Vivekanand - A biography by Swami Nikhilananda - As a wandering monk, Pdf Pg. 50, Book Pg. 109)

(वाह जी वाह दुनियाँ का मुकाबला करना है, तो मांस खाने लग जायें। हमारे चक्रवर्ती राजाओं ने दसियों बार विश्वविजय शाकाहारी सेनाओं के साथ की। और इनका जन्म हुआ है, हमें मांसाहार सिखाने के लिए। आज भी शक्ति के मापक के तौर पर शाकाहारी घोड़े की शक्ति को ही प्रधानता दी जाती है, और "Horse Power" कहा जाता है, न कि "Lion Power")

१६. स्वामी जी ने स्वयं को मलेच्छ, कुछ भी और किसी के साथ भी खाने वाला बताया Pramadadas Mitra को Almora से 30th May 1897 को स्वामी जी लिखते हैं कि मैं मलेच्छ हूँ, शूद्र हूँ और इसलिए मैं किसी के साथ कुछ भी खा लेता हूं।

I am a Mlechchha, Shudra, and so forth; I eat anything and everything, and with anybody and everybody and that in public both abroad and here. (The complete works of Swami Vivekanand, Vol. 6, Pdf Pg. 432, Book Pg. 393)

(कुछ भी खा लेने से तो यही तात्पर्य है कि उन्होंने खाने में किसी भी वर्जित गोमांस आदि मांसाहार को प्रतिबंधित नहीं किया था और किसी के साथ खाने से यह तात्पर्य भी है कि वह मांसाहार करने वाले ईसाई लोगों के साथ भी खाते होंगे।)

• विवेकानंद को मांस भक्षण में होने वाली बर्बरता और क्रूरता का पूर्ण ज्ञान था लेकिन फिर भी वो मांस भक्षण किया करते थे ये उनकी मांस खाने के लिए ललक को ही प्रदर्शित करता है जिसके लिए वो सारे सिद्धांतों एवम संस्कारों को तिलाजली देने को तत्पर रहा करते थे। प्राणियों को अपना बंधुगण बताते हुए स्वामी विवेकानंद कहते हैं की मुझे पता है की ये गलत है कि अपने स्वार्थ के लिए किसी के प्राण लिए लिए जाएँ लेकिन में इसके लिए विवश हो जाता हूं I myself may not be a very strict vegetarian, but I understand the ideal. When I eat meat I know it is wrong. Even if I am bound to eat it under certain circumstances, I know it is cruel. I must not

drag my ideal down to the actual and apologise for my weak conduct in this way. The ideal is not to eat flesh, not to injure any being, for all animals are my brothers. If you can think ofthem as your brothers, you have made a little headway towards the brotherhood of all souls - The complete work of Swami Vivekananda, Vol-2-Pg. 298

में स्वयं एक कट्टर शाकाहारी न भी होऊं किन्तु में उस आदर्श को समझता हूँ जब में मांस खाता हूँ तब जानता हूँ की यह ठीक नहीं है। परिस्थितिवश उसे खाने को बाध्य होने पर भी में यह जानता हूँ के यह क्रूरता है। आदर्श नीचा करके अपनी दुर्बलता का समर्थन मुझे नहीं करना चाहिए। आदर्श यही है। मांस न खाया जाए। किसी भी प्राणी का अनिष्ट न किया जाए क्यूंकि पशुगन भी हमारे भाई हैं। विवेकानंद साहित्य, भाग-8, पृष्ठ 9 स्वामी विवेकानंद जीव हत्या में होने वाली बर्बरता क्रूरता को स्वीकार भी करते हैं उसे गलत और त्याज्य भी मानते हैं वही दुसरे संदर्भों में मांस भक्षण को मनुष्य मात्र का अधिकार भी मानते हैं। जब उनसे पूछा गया की आप मांस भक्षण क्यूँ करते हैं तो वो उत्तर देते हुए कहते हैं की मेरे गुरुदेव कहा करते की थे संसार में कोई भी वस्तु त्याज्य नहीं है। स्वामी विवेकानंद को सम्बोधित करते हुए स्वामी राम कृष्ण परमहंस कहते हैं की तुम मांस भक्षण त्यागने का प्रयास क्यूँ करते हो संसार की हर वस्तु मनुष्य मात्र के उपभोग के लिए बनी हुयी है इसलिए किसी भी वस्तु को त्यागना व्यर्थ है। दोनों बातों में अन्तर्विरोध स्वामी विवेकानंद का प्राणी मात्र के प्रति दोहरेपन को ही दर्शाता है। am always asked the question: "Shall I give up meat?" My Master said, "Why should you give up anything? It will give you up." Do not give up anything in nature. Make it so hot for nature that she will give you up (-The complete work of Swami Vivekanand, Vol

1 Pg. 519) मुझसे बराबर यह प्रश्न किया जाता है - में मांस खान छोड़ दूं ?" मेरे गुरुदेव ने कहा था कोई चीज छोड़ने का पर्यंत तुम ने क्यों करते हो ? वही तुम्हीं को छोड़ देगी। प्रकृती का कोई पदार्थ त्याज्य नहीं है विवेकानंद साहित्य, भाग 4, पृष्ठ -165

विवेकानंद जीव हत्या में होने वाली पीड़ा को अनुभव करते हुए कहते हैं कि मनुष्यों और पशुओं को सुख दु:ख का आभास सामान रूप से होता है जबकि पशु में सुख एवं दु:ख को अनुभव करने की प्रदित्ती मानव मात्र से अधिक होती है। विवेकानंद जब जीव हत्या को न्यायसंगत ना सिध्ध कर सके तो उन्होंने उसे माया का नाम दे दिया की जो हम पशुओं को उनको होने वाले कष्ट को नजरअंदाज करके मारते हैं वो माया है। ये तर्क कुछ ऐसा ही अनर्गल है जो जीव और ब्रह्म की एकता को सिध्ध न कर पर अद्वैतवादी दिया करते हैं। जिस प्रकार अद्वैतवादियों अपने तर्क की सिद्धी के लिए माया की शरण में जाना पड़ता है उसी प्रकार विवेकानंद को भी मांसाहार को न्यायसंगत सिध्ध करने के लिए माया की शरण में जाना पड़ा। यह माया के शरणागत होगा स्वामी विवेकानंद का मांसाहार के प्रति लगाव ही कहा जा सकता है जो उन्हें उन निरीह प्राणियों मार्मिक चीख पुकार न सुनने के लिए विवश कर देता है।

यदि पशु मनुष्य की अपेक्षा इतनी तीव्रता से सुख का अनुभव करते हैं तो यह भी सत्य है की उनके दु:ख का अनुभव भी उतना ही तीव्र होता है मनुष्य की अपक्षा तीव्रतर होता है। अतएव मनुष्य को मरने में जो कष्ट होता हैउसकी अपेक्षा सहस्त्र गुना अधिक कष्ट उन पशुओं को मरने में होता है। फिर भी हम उनके कष्ट की कोई चिंता ना करते हुए उन्हें मार डालते हैं। यही माया है। (विवेकानंद साहित्य भाग 2, पृष्ठ 68)

वैदिक काल में ब्राह्मन मांस खाया करते थे और अतिथियों को प्रसन्न करने के लिए बछड़े मारे जाते थे। The Brahmins at one time ate beef and married Sudras. [A] calf was killed to please a guest. Madura Mail on 28th Jan 1893-The complete work of Swami Vivekanand, Vol 9- Pg. 523

| Mrs. Ole Bull को Alambazar Math Calcutta (Darjelling) से 26th March 1897 को लिखे अपने पत्र में अपनी बीमारी से ग्रस्त होने को बया करते हुए स्वामी विवेकानंद लिखते हैं की केवल मांस खाना ही लम्बी आयु का राज है Admitting about the diabetes problem he said that Eating only meat and drinking no water seems to be the only way to prolong life -The complete work of Swami Vivekanand, Vol -9- Pg. 93

R.M.S. Brittannic से अपने पत्र में अपने भोजन के बारे में लिखते हुए स्वामी विवेकानंद कहते हैं की कुछ दिनों से में केवल मांस ही मांस खा रहा हूँ मुझे सब्जियां खाने को नहीं मिल रही Writing on continuous eating meat he wrote from R.M.S. Brittannic to his blessed and beloved that So far the journey has been very beautiful. The purser has been very kind to me and gave me a cabin to myself. The only difficulty is the food-meat, meat, meat. Today they have promised to give me some vegetables. - The complete work of Swami Vivekanand, Vol-8-Pg 358

मद्रास 1892-93 में विवेकानंद कहते हैं कि समय के साथ विचार बदलते रहते हैं। गाय का मांस खाना एक समय नैतिक था। वातावरण ठंडा था और अन्नों के बारे में जानकारी नहीं थी। मांस सुगमता से मिल जाता था उस काल और वातावरण के हिसाब से माँस खाना आवश्यक था। लेकिन मांस खाना अब अनैतिक माना जाता है Every man, in every age, in every country is under peculiar circumstances. If the circumstances change, ideas also must change. Beef-eating was once moral. The climate was cold, and the cereals were not much known. Meat was the chief food available. So in that age and clime, beef was in a manner indispensable. But beef-eating is held to be immoral now. -The complete work of Swami Vivekanand, Vol -6- Pg. 09

विवेकानंद के यह विचार की अन्नों के बारे में पहले जानकारी नहीं थे इस बात का द्योतक है की उन्होंने वेदाध्यन नहीं किया और वो वेदों के बारे में पाश्चात्य विचारकों के पोषक थे अन्यथा वो यह नहीं कहते परमपिता परमात्मा हमें वेदों में आदेश देते हुए कहता है की तुम अन्न खाओ। वेदों में अन्न खाने का उपदेश होना हमारी सभ्यता के सभ्य एवं विकसित होने को प्रदर्शित करता है लेकिन वेदों के बारे में पाश्चात्य विचारधारा के पोषक गुलाम विवेकानंद इस तथ्य को ना पहचान सके, वेद ना केवल हमें शाकाहार की आज्ञा देता है अपितु कृषि कैसे की जाए इसके बारे में भी विस्तृत जानकारी हमें वेदों में प्राप्त होती है अथर्ववेद के तृतीय अध्याय के निम्नलिखित मंत्र हमें • कृषि की पद्धति के बारे में जानकारी देते हुए स्वामी विवेकानंद के इस कथन की कि पहले अन्नों के बारे में ज्ञान नहीं था का पुरजोर विरोध करते हैं। आर्यों ने जीवन के प्रधान अंग भोजन की शुद्धि पर विशेष

ध्यान दिया है। हमारे ऋषियों का यह विश्वास रहा है की "आहार शुद्धौ सत्यशुद्धिः सत्वशुद्धी ध्रुवा स्मृतिः" अर्थात आहार की शुद्धि से सत्व की शुद्धि होती है और सत्व की शुद्धि से स्मरण शक्ति निश्छल होती है परन्तु अशुद्ध आहार से सत्व और स्मृति भी अशुद्ध हो जाती है।

Marry की 28th April 1897 को अपने स्वास्थय के बारे में लिखते हुए स्वामी विवेकानंद लिखते हैं की मेरे बाल भूरे हो गए हें चहरे पर झुर्रियां पड़ने लगी है और में अपनी उम्र से 20 वर्ष ज्यादा का दिखने लगा हूँ। मेरा शरीर कमजोर हो रहा है। में मांस खाने के लिए ही बना हूँ ना रोटी ना आलू ना राइस ना ही शक्कर My hair is turning grey in bundles, and my face is getting wrinkled up all over, that losing of flesh has given me twenty years of age more. And now I am losing flesh rapidly, because I am made to live upon meat and meat alone - no bread, no rice, no potatoes, not even a lump of sugar in my coffee!! I-The complete work of Swami Vivekanand, Vol-6-Pg 391

वैदिक काल में मांसभक्षण Rachal को 1895 में विवेकानद लिखते हैं कि वैदिककलाम अश्वमेधसबसे घृणित कर्म था। सभी ब्राह्मण ने ऐसा लिखा है और माना भी है ये गलत कैसे हो सकता है And in the Vedic Ashvamedha sacrifice worse things would be done.... All the Brahmanas mention them, and all the commentators admit them to be true. How can you deny them? -The complete work of Swami Vivekanand, Vol 6-Pg 318

The old gods were found to be incongruous these boisterous, fighting, drinking, beef. eating gods of the ancients-whose delight was in the smell of burning flesh and libations of strong liquor. Sometimes Indra drank so much that he fell upon the ground and talked unintelligibly. These gods could no longer be tolerated. The complete work of Vivekanand, Vol 2Pg109 प्राचीन देवताओं में चंचल लड़ाकू शराबी गौ मांसहारी देवताओं में जिनको जले हुए मांस की गथ और तीव्र सुरा की आहुती ही से परम आनंद मिलता था कुछ असंगति देखने लगे। कभी कभी इंद्र इतना मद्य पान कर लेता था की वह बेहोश होकर गिर पड़ता था और अंड बंड बकने लगता था।

स्वामी विवेकानंद शक्ति का राज मांस खाने को बताते हुए कहते हैं की यदि भारत में क्षत्रिय शक्ति होती तो की अंग्रेज भारत पर राज कर सकते थे? भारत को यदि क्षत्रिय शक्ति का विकास करना है तो उन्हें मांस खाना चाहिए "Do you think that a handful of Englishmen could rule India if we had a militant spirit? I teach meat-eating throughout the length and breadth of India in the hope that we can build a militant spirit!" The complete work of Swami Vivekanand, Vol 6Pg.318

हिन्दुओं और चीन देश के निवासियों को देखो वो कितने कमजोर हैं दो मांस नहीं खाते और किसी तरह थोड़ा खा के सब्जियों और चावल पर जीवित रहते हैं। उनकी दयनीय हालत देखो। जापान वासी भी उसी दयनीय हालत में थे लेकिन वो अब बदल गए हैं उन्होंने मांस खान प्रारंभ कर दिया है भारतीय सेना में देखो

कितने सैनिक शाकाहारी हैं। उनमें से श्रेष्ट गोरखा और सिख शाकाहारी नहीं हैं। कुछ कहते हैं की मांसाहार स्वस्थ्य के लिए हानिकारक है। कुछ कहते हैं की या बकवास है। सबसे ज्यादा शाकाहारी पेट की समस्या से ग्रस्त रहते हैं हो सकता है की शाकाहारी भोजन पेट को ठीक रखता हो लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है की आप पुरे संसार पर इसको थोपें। "Look at the Hindus and the Chinamen, how poor they are. They do not take meat, but live somehow on the scanty diet of rice and all sorts of vegetables. Look at their miserable condition. And the Japanese were also in the same plight, but since they commenced taking meat, they turned over a new leaf. In the Indian regiments there are about a lac and a half of native sepoys; see how many of them are vegetarians. The best parts of them, such as the Sikhs and the Goorkhas, are never vegetarians". One party says, "Indigestion is due to animal food". The other says, That is all stuff and nonsense. It is mostly the vegetarians who suffer from stomach complaints." Again, "It may be the vegetable food acts as an effective purgative to the system. But is that any reason that you should induce the whole world to take it?" The complete work of Swami Vivekanand, Vol-6-Pg 484

मांस खाने के कारण असुर देवताओं से अधिक बलवान थे।

विवेकानंद का अद्भुत अप्रतिम ज्ञान।

सभ्यता के विकास पर बोलते हुए विवेकानंद कहते हैं की देवता अन्न और शब्जियों पर जीते थे सभ्य थे और गाँव कस्बों और बाग़ों में रहते थे और बुने हुए कपडे पहनते थे। असुर पहाड़ों पर पठारों पर रेगिस्तान में और समुद्र के किनारे

जंगली जानवरों पर फलों पर और देवताओं से जो उनकी गायों और भेड़ों के बदले मिला उस पर जीवित रहे और पशुओं की खाल को ही पहनते थे। देवता कमजोर थे और कठिन परिश्रम नहीं कर सकते थे असुर उनकी अपेक्षा कहीं अधिक शक्तिशाली थे The Devas lived on grains and vegetables, were civilized dwelt in villages, towns, and gardens, and wore woven clothing. The Asuras (The terms "Devas" and "Asuras" are used here in the sense in which they occur in the Gita (XVI), i.e. races in which the Daivi (divine) or the Asuri (non-divine) traits preponderate.) dwelt in the hills and mountains, deserts or on the sea-shores, lived on wild animals, and the roots and fruits of the forests, and on what cereals they could get from the Devas in exchange for these or for their cows and sheep, and wore the hides of wild animals. The Devas were weak in body and could not endure hardships; the Asuras, on the other hand, were hardy with frequent fasting and were quite capable os suffering all sorts of hardships. The complete work of Swami Vivekanand, Vol-6-Pg523

आज राजस तत्व की अत्यधिक आवश्यकता है । जिन लोगों को आप सात्विक तत्व का समझते हो उनमें से 90 प्रतिशत से अधिक गहन तामस में डूबे हुए हैं । पर्याप्त होगा यदी उनमें से 1/16 भी सात्विक हो। हमें अभी अत्यधिक राजस शक्ती की आवश्यकता है इस देश को राजस शक्ती से परिपूर्ण करना है। इस देश के लोगों को खाने और कपड़ों की आवश्यकता है उन्हें और कारगर बनाना है अन्यथा और पेड़ों और निर्जीव पत्थरों की भांती हो जायेंगे। इसलिए में

कहता हूँ मेरे बच्चों जितना हो सके मछली और मांस का सेवन करो Swamiji: That is what I want you to have. Rajas is badly needed just now! More than ninety per cent of those whom you now take to be men with the Sattva, quality are only steeped in the deepest Tamas. Enough, if you find one-sixteenth of them to be really Sättvika! What we want now is an immense awakening of Rajasika energy, for the whole country is wrapped in the shroud of Tamas. The people of this land must be fed and clothed - must be awakened - must be made more fully active. Otherwise they will become inert, as inert as trees and stones. So, I say, eat large quantities of fish and meat, my boy! The complete work of Swami Vivekanand, Vol-5-Pg 402

कम लोग जानते हैं कि शिकागों वाले धर्म सम्मेलन में ही जैन धर्म के प्रतिनिधि के रूप में २९ वर्षीय युवा १४ भाषाओं में धाराप्रवाह बोलनेवाले श्री वीरचंद राघवजी गाँधी गए थे। उनके भाषण की भी खूब सराहना हुई, और उन्हें रजत पदक देकर सम्मानित भी किया गया। उनसे प्रभावित होकर अनेक लोगों ने मांसाहार त्याग कर शाकाहार अपना लिया। विवेकानन्द की ही तरह ये भी कुछ वर्ष वहीं रुके और अमरीका तथा यूरोप में अनेक व्याख्यान दिए। भारत में १८९६-९७ में भयानक अकाल पड़ा था। अकाल पीडितों की सहायता के लिए वीरचंद गाँधी ने चालीस हजार रुपये तथा गेहूँ से भरकर एक जहाज भारत भिजवाया (विस्तार से पढ़े, डॉ. विपिन दोशी एवं प्रीति शाह की अंग्रेजी कृति " गाँधी बिफोर गाँधी ")

विवेकानंद की वजह से कितने लोगों ने मांसाहार छोड़ा?

एक ने भी नहीं ।।

अब ऐसे गौमांस खाने वाले विवेकानंद में क्या दिव्य शक्ति होगी यह तो कोमा फाऊंडेशन ही जाने ।

वैसा मासभक्षी व्यक्ति कभी भी योगी धार्मिक नहीं बन सकता क्योंकि योग का पहला नियम ही अहिंसा है । वह तो मांस के परमाणुओं से उसका शरीर वैसे ही अपवित्र रहता है भला उसमें दिव्य शक्ति बताना यह तो पामरपन की बातें हैं ।

महाभारत में मांसभक्षण- निषेध :-

महाभारत के अनुशासन पर्व के २१ वें अध्याय में 'हिंसा और मासभक्षण की घोर निन्दा की गई है । मनुष्य को मन, वचन और कर्म से हिंसा न करने और मास न खाने का आदेश देते हुए दिया है ।

रुपमव्यङ्गतामायुर्बुद्धिं सत्त्वं बल स्मृतिम् ।
प्राप्तुकामैरिहिंसा वर्जिता वै महात्मभिः ।।
- (२१/९)

अर्थात् जो सुन्दर रुप, पूर्णाङ्गता, पूर्ण आयु, उत्तम बुद्धि सत्त्व, बल और स्मरणशक्ति प्राप्त करना चाहते थे, उन महात्माओं ने हिंसा का सर्वथा त्यागकर दिया था ।

न भक्षयति यो मांस न च हन्त्यान्न घातयेत् ।
तन्मित्रं सर्वभूतानां मनुः स्वायम्भुवोऽब्रवीत् ॥

- (२२/१३)

अर्थात् :- स्वायम्भुव मनु का कथन है-"जो मनुष्य न मांस खाता है, न पशु-हिंसा करता और न दूसरे से ही हिंसा कराता है, वह सभी प्राणियों का मित्र होता है।"

अधृष्यः सर्वभूतानां विश्वास्यः सर्वजन्तुषु ।
साधूनां सम्मतो नित्यं भवेन्मांस विवर्जयन् ।

- (२१/१३)

अर्थ :- जो मनुष्य मांस का परित्याग कर देता है, वह सब प्राणियों में आदरणीय, सब जीवों का विश्वसनीय और सदा साधुओं से सम्मानित होता है।

स्वमांस परमासेन यो वर्धयितुमिच्छति
नाति क्षुद्रतरस्तस्मात्स नृशंसतरो नरः ।।

- (२१/१४)

अर्थ :- जो दूसरों के मांस से अपना मांस बढ़ाना चाहता है, उससे बढ़कर नीच और निर्दयी मनुष्य दूसरा कोई नहीं हैं।

ददाति यजते चापि तपस्वी च भवत्यपि ।
मधुमांसनिवृत्येति प्राह चैवं बृहस्पतिः ।।

- (२१/९५)

अर्थ :- बृहस्पतिजी का कथन है-"जो मद्य और मांस त्याग देता है, वह दान देता, यज्ञ और तप करता है अर्थात् उसे इन तीनों का फल मिलता है।"

एवं वै परम धर्म प्रशंसन्ति मनीषिणः ।
प्राणा यथाऽऽत्मनोऽभीष्टा भूतानामपि वै तथा ।।

- (२३/१७)

अर्थात् :- इस प्रकार मनीषी पुरुष अहिंसारूप परमधर्म की प्रशंसा करते हैं। जैसे मनुष्य को अपने प्राण प्रिय होते हैं, वैसे ही सभी प्राणियों को अपने- अपने प्राण प्रिय जान पड़ते हैं।

अहिंसा परमो धर्मस्तथाहिंसा पर तपः ।
अहिंसा परम सत्य यतो धर्मः प्रवर्तते ।

- (२१/१९)

अर्थ :- अहिंसा परम धर्म है, अहिंसा परम तप है और अहिंसा परम सत्य है, क्योंकि उसी से धर्म की प्रवृत्ति होती है।

न हि मांस तृणात् काष्ठादुपलाद् वापि जायते ।
हत्वा जन्तु ततो मांसं तस्माद् दोषस्तु भक्षणे ।।

- (२१/२०)

अर्थ :- मांस तृण से, काष्ठ (लकड़ी) से अथवा पत्थर से पैदा नहीं होता, वह प्राणी की हत्या करने पर ही उपलब्ध होता है, अतः उसके खाने में महान् दोष है ।

कान्तारेष्वथ धीरेषु दुर्गेषु गहनेषु च
अमांसभक्षणे राजन् भयमन्यैर्न गच्छति ।।

- (२१/२२)

अर्थ- हे राजन्! जो मनुष्य मास नहीं खाता वह संकटपूर्ण स्थानों, भयंकर दुर्गों और गहन वनों में भी दूसरों से नहीं डरता।

धन्यं यशस्यमायुष्यं स्वर्ग्यं स्वस्त्ययनं महत्।
मांसस्या भक्षणं प्राहुर्नियताः परमर्षयः ॥

- (२१/२७)

अर्थ-नियमपरायण महर्षियों ने मांसभक्षण के त्याग को ही धन, यश, दीर्घायु और स्वर्ग-सुख-प्राप्ति का प्रधान उपाय तथा परमकल्याण का साधन बताया है।

अखादन्ननुमोदंश्च भावदोषेण मानवः।
योऽनुमोदति हन्यन्तं सोऽपि दोषेण लिप्यते ॥

- (२१/३१)

अर्थ-जो स्वयं तो मांस नहीं खाता, परन्तु खाने वाले का अनुमोदन करता है, वह भी भाव दोष के कारण मांसभक्षण के पाप का भागी होता है। इसी प्रकार जो मारनेवाले का अनुमोदन करता है, वह भी हिंसा के दोष से लिप्त होता है।

हिरण्यदानैर्गोदाने भूमिदानैश्च सर्वशः।
मांसस्याभक्षणे धर्मो विशिष्टः स्यादिति श्रुतिः ॥

- (२१/३३)

अर्थ- सुवर्णदान, गोदान और भूमिदान करने से जो धर्म प्राप्त होता है, मांसभक्षण न करने से उसकी अपेक्षा भी विशिष्ट धर्म की प्राप्ति होती है, ऐसा सुना जाता है।

इज्यायज्ञ श्रुतिकृतैर्यो मार्गेरबुधोऽधमः।
हन्याज्जन्तून् मसिगृध्नुः स वै नरकभाङ्नरः ॥

- (२२/३४)

अर्थ- जो मांसलोभी मूर्ख एवम् अधम मनुष्य यज्ञ-याग आदि वैदिक मार्गों के नाम पर प्राणियों की हिंसा करता है, वह नरकगामी होता है।

नात्मनोऽस्ति प्रियतरः पृथिवीमनुसृत्य ह।
तस्मात्प्राणिषु सर्वेषु दयावानत्मवान् भवेत्॥

- (२१/४७)

अर्थात्-इस भूमण्डल पर अपने आत्मा से बढ़कर कोई प्रिय पदार्थ नहीं है, अतः मनुष्य को चाहिए कि प्राणियों पर दया करे और सबको अपनी ही आत्मा समझे।

स भक्षयते यस्माद् भक्षयिष्ये तमप्यहम्।
समासस्य मांसत्वमनुबद्धास्व भारत ।।

- (२१/५१)

अर्थात्-हे भारत! (वध्य प्राणी कहता है-) 'आज मुझे वह खाता है, तो कभी मैं भी उसे खाऊँगा" यही मांस का मांसत्व है यही मांस शब्द का तात्पर्य है।

सर्वयज्ञेषु वा दानं सर्वतीर्थे

आइए अब आगे देखते हैं कि किस प्रकार विवेकानंद ने अन्य धर्मों/मतों को वैदिक धर्म से ही श्रेष्ठ बताकर सनातन धर्म पर ही कुल्हाड़ी चला दी -

१. इस्लाम को वैदिक सनातन धर्म से ऊंचा बताना -

वेदान्त के सिद्धान्त, कितने ही अच्छे और विलक्षण क्यों न हो, इस्लाम की सहायता के बिना किसी काम के नही।

Without the help of practical Islam, the theories of Vedantism, however fine and wonderful they may be, are entirely valueless to the vast mass of mankind." (Vivekanand - A biography by Swami Nikhilananda - In Northern India, Pdf Pg. 132, Book Pg.284)

(वाह रे सन्यासी!, जब इस्लाम इस धरती पर था भी नहीं, तब सृष्टि के आदिकाल से वैदिक धर्म का ही इस सारे विश्व में प्रचार था।)

२. हिन्दुत्व और इस्लाम को मिला देने के समर्थक 1

हमारी मातृभूमि के लिए हिंदुत्व और इस्लाम, दो महान् धर्मों की संधि, जिसमें वैदान्तिक मस्तिष्क और इस्लामिक शरीर हो, केवल यही एक आशा है। For our own motherland a junction of the two great systems, Hinduism and Islam Vedantic brain and Islamic body-is the only hope. - (Vivekanand - A biography by Swami Nikhilananda In Northern India, Pdf Pg. 132, Book Pg. 284)

(वाह रे संन्यासी उदारवादी हिंदुओं को भी जिहादी बनाने के लिए अच्छा विकल्प दिया। लगता है, विवेकानंद सनातन धर्म को समाप्त करने के लिए ही उसमें इस्लाम की मिलावट करवाना चाहते थे।)

३. केवल इस्लाम के अनुयायी ही व्यवहार में उत्तम हैं इस्लाम और केवल इस्लाम के अनुयायी ही ऐसे लोग हैं, जो मनुष्यमात्र को अपनी आत्मा के समान मानते और वैसा ही व्यवहार करते हैं।

Yet practical Advaitism, which looks upon and behaves towards all mankind as one's own soul, is yet to be developed among the Hindus universally. On the other hand, our experience is that if ever the followers of any religion approach to this equality in an appreciable degree on the plane of practical work-a-day life...-it is those of Islam and Islam alone. - (A biography by Swami Nikhilananda - In Northern India, Pdf Pg. 132, Book Pg. 284) (यदि केवल इस्लाम के अनुयायी ही व्यवहारिक रूप से श्रेष्ठ हैं, तो फिर स्वामी विवेकानन्द सनातन धर्म के प्रतिनिधि क्यों बने रहे, उसको छोड़कर इस्लाम क्यों नहीं स्वीकार कर लिया? लगता है, विवेकानन्द इस्लाम की जिहादी मानसिकता को भूल गए।)

४. मोहम्मद के प्रति स्वामी जी के विचार मोहम्मद समानता, मनुष्य के भाईचारे, सभी मुसलामानों के भाईचारे के पैगंबर थे।

Mohammed was the Prophet of equality, of the brotherhood of man, the brotherhood of all Mussulmans. - (Vivekananda - A

biography by Swami Nikhilananda, Appendix, PDF page 203, Complete works of Swami Vivekananda, Vol. 4, PDF page 109)
(वाह रे स्वामी! मोहम्मद यदि समानता का मसीहा था, तो उनके मत में इतनी जिहादी मानसिकता और आतंकवाद क्यों भरा हुआ है ?)

(विश्व-विख्यात तथाकथित धर्मविद) का ये हाल है।

मुहम्मद (इन्सानी) बराबरी इन्सानी भाईचारे और तमाम मुसलमानों के भाईचारे के पैग़म्बर थे... जैसे ही कोई व्यक्ति इस्लाम स्वीकार करता है पूरा इस्लाम बिना किसी भेदभाव के उसका खुली बाहों से स्वागत करता है, जबकि कोई दूसरा धर्म ऐसा नहीं करता। हमारा अनुभव है कि यदि किसी धर्म के अनुयायियों ने इस (इन्सानी) बराबरी को दिन-प्रतिदिन के जीवन में व्यावहारिक स्तर पर बरता है तो वे इस्लाम और सिर्फ़ इस्लाम के अनुयायी हैं। ..मुहम्मद ने अपने जीवन आचरण से यह बात सिद्ध कर दी कि मुसलमानों में भरपूर बराबरी और भाईचारा है। यहाँ वर्ण, नस्ल, रंग या लिंग (के भेद) का कोई प्रश्न ही नहीं। इसलिए हमारा पक्का विश्वास है कि व्यावहारिक इस्लाम की मदद लिए बिना वेदांती सिद्धांत-चाहे वे कितने ही उत्तम और अद्भुत हों-विशाल मानव-जाति के लिए मूल्यहीन (Valueless) हैं...।"
-'टीचिंग्स ऑफ विवेकानंद, पृष्ठ 214, 215, 217, 218)

५. इस्लाम के प्रति स्वामी जी के विचार

जैसे ही कोई व्यक्ति मोहम्मडन बन जाता है, पूरा इस्लाम उसे भाई के रूप में, खुली बांहों के साथ, बिना कोई भेद किए, स्वागत करता है, जो कोई अन्य धर्म नहीं करता है।

As soon as a man becomes a Mohammedan, the whole of Islam receives him as a brother, with open arms, without making any distinction, which no other religion does. (Vivekananda - A biography by Swami Nikhilananda, Appendix, PDF page 204, Complete works of Swami Vivekananda, Vol. 2, PDF page 299)

(सही कहा स्वामी तुमने मुसलमान बन जाने के बाद इस्लाम तो उसको स्वीकार करेगा ही क्योंकि वह भी बकरीद के दिन बकरों की बलि देकर उनकी तरह निर्दोष प्राणियों की हिंसा करेगा और दुनिया में कुरान के अनुसार आतंकवाद को फैलाएगा। यही विशेषता स्वामी जी को प्रिय लगी, जो वैदिक धर्म में नहीं है। लगता है, दुनिया को इस्लामिक बनाना ही स्वामी विवेकानन्द का उद्देश्य था!)

६. जीसस क्राइस्ट के प्रति स्वामी जी के विचार

• यदि मैं एक पूर्वीय के रूप में, नज़ारेथ के यीशु की पूजा करता हूं, तो मेरे पास केवल एक ही रास्ता बचा है, और वह • यह है कि उसे भगवान् के रूप में पूजा जाए, और कुछ नहीं "ईशदूत ईसा, स्वामी विवेकानन्द, पृष्ठ १७"

If I as an Oriental, have to worship Jesus of Nazareth, there is only one way left to me, and that is to worship him as God, and nothing else. - (Vivekananda - A biography by Swami Nikhilananda, Appendix, PDF page 203, Complete works of Swami Vivekananda, Vol. 4, PDF page 120)

(वाह रे संन्यासी ! यदि एकदेशी जीसस को भगवान् मान कर पूजोंगे, तो गीता के अनुसार उस सर्वव्यापी भगवान् का क्या होगा, जो सभी प्राणियों में समान रूप से व्यापक है? "वह जो सभी प्राणियों में सर्वोच्च भगवान् को समान रूप से देखता है, वह वास्तव में देखता है।" - भगवद्गीता ६/२९- "He who sees the Supreme Lord dwelling alike in all beings, he sees indeed." - Bhagwad Geeta 6 / 29)

मूर्तिपूजक पौराणिक स्वामी विवेकानंद को अपना आदर्श मानते हैं, परंतु स्वामी विवेकानंद के अनुसार मूर्तिपूजा अल्पबुद्धि जनों के लिए है और एक निम्नतम विचार है

१. मूर्तिपूजा अल्पबुद्धि लोगों के लिए है

"Idolatry is the attempt of undeveloped minds to grasp high spiritual truths" (The complete work of Swami Vivekanand, Vol. 1. Pdf Pg. 17, Teachings of swami vivekanand, page 142)

अर्थात् मूर्तिपूजा अविकसित मस्तिष्क (अल्पबुद्धि) वाले लोगों के लिए आध्यात्मिक सच्चाइयों को ग्रहण करने में समर्थ होने में साधनरूप है । ऐसा है तो, जीवनभर मूर्तिपूजा करने वाले विवेकानंद और लगभग सभी मूर्तिपूजक अल्पबुद्धि क्यों न समझे जायें?

२. सनातन धर्म में मूर्तिपूजा निम्नतम विचार है

Incidentally, he discloses his conception of the Sanatana Dharma - "From the high spiritual flights of the Vedanta philosophy... to the lowest ideas of idolatry...all have a place in the Hindu's religion (The complete work of Swami Vivekanand, Vol. 1, Pdf Pg. 424)

(यदि मूर्तिपूजा एक निम्नतम विचार है, तो स्वयं स्वामी विवेकानंद और उसके समर्थक मूर्तिपूजा छोड़ क्यों न सके।

शिष्य का प्रश्न :- मछली तथा मांस खाना क्या उचित तथा आवश्यक है?

विवेकानंद का उत्तर :- खूब खाया कर घास पात खाकर पेट रोग से पीड़ित बाबाजी के दलों से देश भर गया है ये सत्यगुण के लक्षण नहीं है। महातमोगुण की छाया है मृत्यु की छाया है।

(विवेकानंद के संग में पृष्ठ 269)

अर्थात् विवेकानंद के विचार में शाकाहारी भोजन करना तमोगुण है और मांस मक्षी गाय खाना सत्वगुण वाह रे तथाकथित सन्यासी!

गुरु चेला एक समान, करें हैं फेकमबाजी।
दोनों खायें गौमांस, कहें खुद को सन्यासी ।।

References & PDF Books Link

- Complete Works Of Swami Vivekananda Nine Volumes :-

  PDF Link. To Download Click On It.

- Patravali Bhag-i (1) :-

  PDF Link. To Download Click On It.

- Patravali Bhag-ii (2) :-

  PDF Link. To Download Click On It.

- Swami Vivekanand Se Vartalap :-
  PDF Link. To Download Click On It.

- Dharma Rahasya Swami Vivekananda :-

  PDF Link. To Download Click On It.

- Teachings of Swami Vivekananda :-

  PDF Link. To Download Click On It.

यह पुस्तकें ना हमने छापी हे ना ही इसमें हमारे कोई शब्द हे. यदि सत्य स्वीकार करना हे तो करें. बाकी गाली देना और अंध भक्ति करना आपका निर्णय होगा. ईश्वर आपको श्रेष्ठ बनाएं इसी कामना के साथ.

इस संस्करण के हमारे मुद्रण या लेखनी दोष को अगले संस्करण में ठीक कर दिया जायेगा.

टीम आर्यावर्त पुस्तकालय

जय आर्यावर्त